पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूहा़नी शख़्सिय्यत शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये, दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी की ह़याते मुबा-रका के रौशन अवराक़

तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العاليه

Huqooqul Ibaad Ki Ehtiyaten (Hindi)

हुक़ूक़ुल इ़बाद की एह़तियातें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अर्ज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(اَلْمُسْتَطْرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें

येह रिसाला (**हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियातें**)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयों ! बिला शुबा बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की किताबे ह़यात के हर सफ़ह़े में हमारे लिये **रहनुमाई** के **म-दनी फूल** होते हैं। येह वोह हस्तियां हैं जिन के शाम व सह़र अपने **रब** عَزَّوَجَلَّ की **रिज़ा** पाने की कोशिश में गुज़रते हैं। इन नुफ़ूसे क़ुदसिय्या की सीरत का तज़्किरा करना, सुनना, सुनाना और इस की इशाअ़त करना ऐन सआ़दत और **अल्लाह व रसूल** عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पाने का अ़ज़ीम ज़रीआ़ है। **ग़ालिबन** इसी मुक़द्दस जज़्बे के तह़त मुअल्लिफ़ीन व मुअर्रिख़ीन ने इन बुज़ुर्गों के **ह़ालाते ज़िन्दगी** क़लम बन्द किये हैं मगर चन्द एक मिसालों को छोड़ कर देखा जाए तो हम अपने **अकाबिरीन** की ह़यात व ख़िदमात को उन की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में मह़फ़ूज़ करने में नाकाम रहे हैं।

आ'ला ह़ज़रत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن ने अपने दूसरे सफ़रे ह़ज के वाक़िआ़त बयान करते हुए इस त़रफ़ तवज्जोह दिलाई है, चुनान्चे आप फ़रमाते हैं : **इस क़िस्म** के वक़ाएअ़ (या'नी वाक़िआ़त) बहुत थे कि याद नहीं। अगर उसी वक़्त मुन्ज़बत़ कर लिये जाते (या'नी लिख लिये जाते), मह़फ़ूज़ रहते, **मगर इस का हमारे साथियों में से किसी को एह़सास भी न था।** (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत (मुकम्मल), स. 209, मत़बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) एक और जगह सफ़रे ह़ज के वाक़िआ़त बयान करते हुए इस त़रह़ तवज्जोह दिलाई : येह

तमाम **वक़ाएअ** (या'नी वाक़िआत) ऐसे न थे कि इन को मैं **अपनी ज़बान से कहता**, हमराहियों को तौफ़ीक़ होती और आते और जाते और अय्यामे क़ियाम हर सरकार के **वाक़िआत** रोज़ाना तारीख़ वार **क़लम बन्द** करते तो **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ و صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बे शुमार ने'मतों की **यादगार** होती, **उन से रह गया और मुझे बहुत कुछ सह्व हो गया। जो याद आया बयान किया**, निय्यत को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जानता है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत (मुकम्मल), स. 225 मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना)

इन सब बातों के पेशे नज़र ज़रूरी था कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की हयाते ज़ाहिरी ही में इन की ज़िन्दगी के गोशे किताबी शक्ल में महफ़ूज़ कर लिये जाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के करम से शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या की त़रफ़ से ता दमे तहरीर 5 रसाइल शाएअ हो चुके हैं।

☆ **तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत** (क़िस्त 1), ☆ **इब्तिदाई हालात** (क़िस्त 2), ☆ **सुन्नते निकाह** (क़िस्त 3) ☆ **शौक़े इल्मे दीन** (क़िस्त 4) ☆ **इल्मो हिक्मत के 125 म-दनी फूल** (क़िस्त 5) और इस वक़्त **"तज़्किरए अमीरे अहले सुन्नत"** का रिसाला **क़िस्त 6 बनाम "हुक़ूक़ुल इबाद की एहतियातें"** आप के हाथ में है।

اِنْ شَآءَاللهُ عَزَّوَجَلَّ क़िस्त 7 **"अमीरे अहले सुन्नत और फ़न्ने शे'री"** के नाम से अ़न्क़रीब पेश किया जाएगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से दुआ़ है कि हमें क़िब्ला शैखे़ त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के ज़ेरे साया "**अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश**" के लिये म-दनी इन्आ़मात के मुत़ाबिक़ अ़मल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلَّى اللهُ تعالى عليه واٰلهٖ وسلَّم

शो'बए अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

26 र-मज़ानुल मुबारक 1432 हि./ 27 अगस्त 2011 ई.

......इल्म सीखने से आता है......

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم :

"इल्म सीखने से ही आता है और फ़िक़्ह ग़ौरो फ़िक्र से ह़ासिल होती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन में समझ बूझ अ़त़ा फ़रमाता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।"

(المعجم الكبير، ج١٩، ص ٥١١، الحديث: ٧٣١٢)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपने रिसाले **ज़ियाए दुरूदो सलाम** में **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नक़्ल फ़रमाते हैं, "जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वज्ह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** तआ़ला पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और उस रात के गुनाह बख़्श दे।" (الترغيب والترهيب ج٢ص٣٢٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मुफ़्लिस कौन ?

ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्लिम बिन ह़ज्जाज क़ुशैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى अपने मश्हूर मज्मूअ़ए ह़दीस "सह़ीह़ मुस्लिम" में नक़्ल करते हैं : सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार, हम ग़रीबों के ग़म गुसार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार **जनाबे अह़मदे मुख़्तार** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस कौन है ?** सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! हम में से जिस के पास दराहिम व सामान न हों वोह मुफ़्लिस है। फ़रमाया : मेरी उम्मत में

मुफ़्लिस वोह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़े और ज़कात ले कर आया और यूं आया कि उसे गाली दी, उस पर तोहमत लगाई, इस का माल खाया, उस का ख़ून बहाया, उसे मारा तो इस की नेकियों में से कुछ इस मज़्लूम को दे दी जाएं और कुछ उस मज़्लूम को, फिर इस के ज़िम्मे जो **हुक़ूक़** थे उन की अदाएगी से पहले इस की नेकियां ख़त्म हो जाएं तो उन मज़्लूमों की ख़त़ाएं ले कर इस ज़ालिम पर डाल दी जाएं फिर इसे आग में फेंक दिया जाए।''

(صَحِیح مُسلِم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۱ دار ابن حزم بیروت)

लरज़ उठो !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि ह़क़ीक़त में **मुफ़्लिस** वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व स-दक़ात, सख़ावतों, फ़लाह़ी कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद क़ियामत में ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! जिन को कभी गाली दे कर, कभी बिला इजाज़ते शर-ई डांट कर, बे इज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मारपीट कर के, आ़रियतन चिज़ें ले कर क़स्दन वापस न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर, दिल दुखा कर नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उठा कर **वासिले जहन्नम** कर दिया जाएगा।

''**सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़**'' में है, **अल्लाह** के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : ''बेशक रोज़े क़ियामत तुम्हें अहले हुक़ूक़ को उन के ह़क़ अदा करने होंगे ह़त्ता कि बे सींग वाली बकरी का सींग वाली बकरी से बदला लिया जाएगा।''

(صَحِیح مُسلِم ص ۱۳۹۴ حدیث ۲۵۸۲)

मत़लब येह कि अगर तुम ने दुन्या में लोगों के **हुक़ूक़** अदा न किये तो ला मह़ाला (या'नी हर सूरत में) क़ियामत में अदा करोगे, यहां दुन्या में माल से और आख़िरत में आ'माल से, लिहाज़ा बेहतरी इसी में है कि दुन्या ही में अदा कर दो वरना पछताना पड़ेगा। "**मिरआत शर्हे मिश्कात**" में है : "जानवर अगर्चे शर-ई अह़काम के मुकल्लफ़ नहीं हैं मगर **हुक़ूक़ुल इबाद** जानवरों को भी अदा करने होंगे।"

(मिरआत, जि. 2, स. 674)

تُوْبُوْا اِلَى الله! اَسْتَغْفِرُ الله

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल क़र्ज़ के नाम पर लोगों के हज़ारों बल्कि लाखों रुपै हड़प कर लिये जाते हैं। अभी तो येह सब आसान लग रहा होगा लेकिन क़ियामत में बहुत महंगा पड़ जाएगा। **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है कि जो दुन्या में किसी के तक़रीबन तीन पैसे दैन (या'नी क़र्ज़) दबा लेगा बरोज़े क़ियामत इस के बदले **सात सो बा जमाअ़त नमाज़ें** देनी पड़ जाएंगी। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 25, स. 69) जी हां ! जो किसी का क़र्ज़ा दबा ले वोह ज़ालिम है और सख़्त नुक़्सान व ख़ुसरान में है। ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान त़-बरानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی अपने मज्मूअ़ए ह़दीस "त़-बरानी" में नक़्ल करते हैं : सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया जिस का मफ़्हूम है : ज़ालिम की नेकियां मज़्लूम को, मज़्लूम के गुनाह ज़ालिम को दिलवाए जाएंगे।

(اَلْمُعْجَمُ الْكَبِيْر ج۳ ص۱۴۸ حديث ۲۹ ۳۰۹ داراحياء التراث العربى بيروت ملتقطاً)

नेकियों के ज़रीए मालदार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बन्दों की ह़क़ त-लफ़ी आख़िरत के लिये बहुत ज़ियादा नुक़्सान देह है, ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मद बिन ह़र्ब عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّبّ फ़रमाते हैं : कई लोग नेकियों की कसीर दौलत लिये दुन्या से मालदार रुख़्सत होंगे मगर बन्दों की **ह़क़ त-लफ़ियों** के बाइ़स क़ियामत के दिन अपनी सारी नेकियां खो बैठेंगे और यूं ग़रीब व नादार हो जाएंगे। (تَنبِيهُ المُغتَرِّين ص ۵۳ دار المعرفة بيروت)

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू त़ालिब मुह़म्मद बिन अ़ली मक्की عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى "**क़ूतुल क़ुलूब**" में फ़रमाते हैं : ज़ियादा तर (अपने नहीं बल्कि) दूसरों के गुनाह ही दोज़ख़ में दाख़िले का बाइ़स होंगे जो (हुक़ूक़ुल इबाद तलफ़ करने के सबब) इन्सान पर डाल दिये जाएंगे। नीज़ बे शुमार अफ़राद (अपनी नेकियों के सबब नहीं बल्कि) दूसरों की नेकियां ह़ासिल कर के जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।" (قُوتُ القُلُوب ج۲ ص ۲۹۲) ज़ाहिर है दूसरों की नेकियां ह़ासिल करने वाले वोही होंगे जिन की दुन्या में दिल आज़ारियां और **ह़क़ त-लफ़ियां** हुई होंगी। यूं बरोज़े क़ियामत मज़्लूम और दुख्यारे फ़ाएदे में रहेंगे।

मैं ने तेरा कान मरोड़ा था

हमारे अस्लाफ़ رَحِمَهُمُ الله **हुक़ूक़ुल इबाद** के ह़वाले से किस क़दर ह़स्सास होते थे इस का अन्दाज़ा इस रिवायत से लगाइये, चुनान्चे **ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी** رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने अपने एक ग़ुलाम से फ़रमाया : **मैं ने एक मर्तबा तेरा कान मरोड़ा था** इस लिये तू मुझ से इस का बदला ले ले। (الرّيا ض النضرة فى مناقِب العَشرة، جزء ۳ ص ۴۵ دارالكتب العلمية بيروت)

सूई न लौटाने का नतीजा

एक बुजु़र्ग رَحْمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ को ख़्वाब में देख कर पूछा गया : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? फ़रमाया : मुझे भलाई अ़त़ा फ़रमाई मगर (फ़िलह़ाल) एक सूई के सबब मुझे जन्नत में जाने से रोक दिया गया है जो मैं ने आ़रियतन ली थी और उसे लौटा नहीं सका था ।

(الزواجرعن اقتراف الکبائر، کتاب البیع،باب المناھی من البیوع، ج ۱، ص ۵۰۴)

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ और हुकूकुल इबाद

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने हुकूकुल इबाद की अहम्मिय्यत मुला-ह़ज़ा फ़रमाई । **शैख़े** त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ जहां **हुकूकुल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मुआ़-मले में ह़द द-रजा मोह़तात़ हैं वहां **हुकूकुल इबाद** के मुआ़-मले में भी बेह़द एह़तियात़ बरत़ते हैं । आप फ़रमाते हैं : **हुकूकुल्लाह** अगर **अल्लाह** तआ़ला चाहे तो अपनी रह़मत से मुआ़फ़ फ़रमा देगा मगर **हुकूकुल इबाद** का मुआ़-मला सख़्त तर है कि जब तक वोह बन्दा जिस का ह़क़ तलफ़ किया गया है, **मुआ़फ़** नहीं करेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाएगा अगर्चे येह बात **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर वाजिब नहीं मगर उस की मरज़ी येही है कि जिस का ह़क़ तलफ़ किया गया है उस मज़्लूम से **मुआ़फ़ी** मांग कर राज़ी किया जाए ।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

“या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हर मुसलमान की मग़्फ़िरत फ़रमा” के 25 हुरूफ़ की निस्बत से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की म-दनी एह़तियातियों पर मुश्तमिल “पच्चीस” ईमान अफ़रोज़ वाक़िआत व ह़िक्मत भरे मल्फ़ूज़ात

﴾1﴿ म-दनी ह़ल

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के (मर्ह़ूम) मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी **मुह़म्मद या'क़ूब अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى एक मर्तबा **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ज़ियारत के लिये मर्कज़ुल औलिया (लाहोर) में ह़ाज़िर हुए । दौराने मुलाक़ात **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को कुछ लिखने की ज़रूरत पेश आई तो मर्ह़ूम ने इन की ख़िदमत में अपना क़लम पेश किया । ह़ैदरआबाद वापसी पर उन्हें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की जानिब से एक रुक़्आ़ मौसूल हुवा, जिस का अ़क्स पेशे ख़िदमत है ।
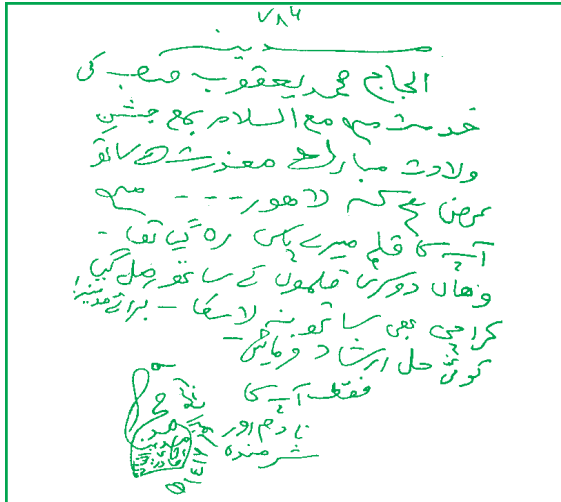
हिन्दी : अलह़ाज मुह़म्मद या'क़ूब साह़िब की ख़िदमत में मअ़स्सलाम बमअ़ जश्ने विलादत मुबारक । मा'ज़िरत के साथ अ़र्ज़ है कि लाहोर... में आप का

क़लम मेरे पास रह गया था। वहां दूसरी क़लमों के साथ मिल गया कराची भी साथ न ला सका। बराए मदीना ! कोई ह़ल इर्शाद फ़रमाएं।

फ़क़त् आप का नादिम और शर्मिन्दा

दस्त-ख़त्

इस रुक्ए़ की तह़रीर में हुक़ूक़ुल इबाद की एह़तियात् की ख़ुश्बू के साथ **सुवाल** से बचने की महक वाज़ेह़ मह़सूस की जा सकती है। कोई और होता तो शायद येह लिखता कि आप चाहें तो मुआ़फ़ फ़रमा दें मगर आप ने "**कोई ह़ल इर्शाद फ़रमाएं**" लिखा, ताकि सुवाल करने से बचत रहे।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ दरी का धागा

मज़्कूरा पेन से मु-तअ़ल्लिक़ परची भेजने का वाक़िआ़ एक मौक़अ़ पर मर्कज़ी मजलिसे शूरा के साबिक़ निगरान (मर्ह़ूम) **ह़ाजी मुश्ताक़ अ़त्तारी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِى को सुनाया गया तो आप ने भी एक रुक्आ़ दिखाया जिस में अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने कुछ इस त़रह़ तह़रीर फ़रमाया था :

"बा'दे सलाम अ़र्ज़ है कि आप के अ़लाक़े में "**ग्यारहवीं शरीफ़**" की मह़फ़िल थी। मैं जहां बैठा था, उस दरी का मुझ से एक धागा टूट गया था। येह **हुक़ूक़ुल इबाद** का मुआ़-मला है। जिस डेकोरेशन वाले की दरियां हैं उस से मेरी त़रफ़ से जा कर मुआफ़ी मांग लें, अगर वोह मुआ़फ़ न करे तो मैं ख़ुद मुआ़फ़ी के लिये ह़ाज़िर हो जाऊंगा। मेहरबानी फ़रमा कर मुझे जल्द इस की इत्तिलाअ़ करें।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े**

हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾3﴿ पेन्टर से मा'ज़िरत

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पहले पहल कराची की एक मस्जिद में इमामत फ़रमाते थे। आप को मस्जिद के हुजरे के लिये अपने नाम की प्लेट लगाने की ज़रूरत मह़सूस हुई तो आप ने तह़रीरी तौ़र पर अपना नाम "**मुह़म्मद इल्यास क़ादिरी र-ज़वी**" पेन्टर के ह़वाले किया और उजरत भी तै़ कर ली। जब आप वोह प्लेट वापस लेने गए तो पेन्टर के मुलाज़िम से कहा कि क़ादिरी र-ज़वी के साथ "**ज़ियाई**" का लफ़्ज़ भी बढ़ा दे (ताकि पीरो मुर्शिद सय्यिदुना ज़ियाउद्दीन म-दनी عَلَيْهِ الرَّحْمَه की त़रफ़ निस्बत का भी इज़्हार हो जाए)।

उस मुलाज़िम ने येह लफ़्ज़ बढ़ा दिया और आप पहले से तै़ शुदा उजरत अदा कर के वापस लौट आए। फिर अचानक ख़याल आया कि मुझ से तो ह़क़ त-लफ़ी हो गई है या'नी उजरत तै़ करने के बा'द लफ़्ज़ "**ज़ियाई**" और वोह भी पेन्टर की इजाज़त के बिग़ैर उस के मुलाज़िम से लिखवाया है जब कि ज़ाहिर है कि उजरत तै़ कर लेने के बा'द किसी लफ़्ज़ के इज़ाफ़े का ह़क़ ह़ासिल न था, फिर इस इज़ाफ़े में रंग भी इस्ति'माल हुवा और उस मुलाज़िम का वक़्त भी सर्फ़ हुवा। येह सोच कर आप परेशान हो गए और दोबारा पेन्टर के पास पहुंच कर अपनी परेशानी का इज़्हार किया और फ़रमाया कि "**बराए मेह़रबानी ! आप मज़ीद पैसे ले लें या लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा मुआ़फ़ फ़रमा दें।**" आप का येह अन्दाज़ देख कर पेन्टर हक्का बक्का रह गया और उस ने मुआ़फ़ी के साथ साथ आप से गहरी अ़क़ीदत का इज़्हार किया और येह दुआ़ मांगी कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे भी आप जैसा कर दे।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ पोलीस वाले की तलाश

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ एक रात स-ह़री के वक़्त कहीं से घर वापस आ रहे थे कि आप के क़ाफ़िले में शामिल गाड़ियों को एक नाके पर पोलीस वालों ने रोक लिया और **तलाशी** लेने पर इसरार किया। उन से दर-ख़्वास्त की गई कि स-ह़री का वक़्त ख़त्म होने ही वाला है इस लिये आप बिग़ैर **तलाशी** के जाने दीजिये लेकिन उन्हों ने इस की इजाज़त देने से इन्कार कर दिया बल्कि वोह और शक में पड़ गए कि येह महीना र-मज़ान का तो नहीं है, लिहाज़ा उन्हों ने काफ़ी देर चेकिंग वग़ैरा की जिस की वज्ह से स-ह़री का वक़्त ख़त्म हो गया।

तलाशी ले चुकने के बा'द एक पोलीस वाले ने मा'ज़िरत ख़्वाहाना अन्दाज़ में कहा : क्या करें जी ! येह हमारी ड्यूटी है।" आप دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ के मुंह से बे इख़्तियार येह अल्फ़ाज़ निकल गए, "काश ! आप अपना फ़र्ज़ समझते !" जब क़ाफ़िला घर पहुंचा तो कुछ ही देर बा'द इस्लामी भाइयों को **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की तलाश हुई क्यूं कि आप कहीं दिखाई न दे रहे थे। कुछ देर गुज़रने के बा'द आप बाहर से तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि "**मैं** ने उस पोलीस वाले से येह कह डाला था कि "**काश ! आप अपना फ़र्ज़ समझते**" हो सकता है कि उस की दिल आज़ारी हो गई हो कि उस ने तो अपनी ड्यूटी अन्जाम दी थी, **इस लिये मैं उस को राज़ी करने की ख़ातिर निकला था।**"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

《5》 मुबल्लिग़ की इस्लाह़

एक मुबल्लिग़ इस्लामी भाई का बयान है कि दा'वते इस्लामी का इब्तिदाई दौर था। म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र के दौरान चाय पीने के लिये एक होटल में जाना पड़ा तो मैं ने सामने रखे हुए नमक को चख लिया। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़ौरन फ़रमाया, "येह आप ने क्या किया?" उ़र्फ़ में येह नमक खाना खाने वालों के लिये रखते हैं।" फिर **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने काउन्टर पर मुबल्लिग़ को साथ ले जा कर होटल के मालिक से कहा : "**आप ने नमक ग़ालिबन खाना खाने वालों के लिये रखा होगा मगर इस इस्लामी भाई ने इसे चख लिया है जब कि हमें सिर्फ़ चाय पीनी थी, लिहाज़ा ! इन को मुआ़फ़ फ़रमा दें**" होटल का मालिक येह सुन कर ह़ैरत ज़दा हो गया कि इस दौर में कौन इतनी एह़तियात़ करता है? फिर उस ने कहा : "हु़ज़ूर ! कोई बात नहीं।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

《6》 क़ित़ार में एह़तियात़

शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **1400** हि. में ह़-रमैने त़य्यिबैन की ज़ियारत का इरादा किया और अपना पासपोर्ट वीज़ा के लिये जम्अ़ करवा दिया। वीज़ा लग जाने पर जब **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अपना पासपोर्ट लेने के लिये मु-तअ़ल्लिक़ा एम्बीसी पहुंचे तो वीज़ा लेने वालों की एक त़वील **क़ित़ार** लगी हुई थी। **आप**

क़ित़ार ही में खड़े हो गए । किसी शनासा ट्रावेल एजन्ट (TRAVEL AGENT) की नज़र आप पर पड़ी कि इतने आ'ला मर्तबे के ह़ामिल होने के बा वुजूद इन्किसारी करते हुए **क़ित़ार** में खड़े हुए हैं तो उस ने बा'दे सलाम अ़र्ज़ किया, "हुज़ूर **क़ित़ार** बहुत त़वील है, आप को कई घन्टों तक धूप में इन्तिज़ार करना पड़ेगा, आइये मैं आप को (अपने तअ़ल्लुक़ात की बिना पर) खिड़की के क़रीब पहुंचा देता हूं ।" (कोई और होता तो शायद उस के दिल की कली खिल जाती कि कड़ी धूप से नजात मिलने के साथ साथ आसानी से मस्अला ह़ल होगा) मगर **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बड़ी नरमी से मन्अ़ फ़रमा दिया, जिस की वज्ह येह थी कि अगर आप उस की पेशकश क़बूल फ़रमा कर आगे तशरीफ़ ले जाते तो पहले से **क़ित़ार** में खड़े होने वालों की ह़क़ त-लफ़ी हो जाती ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾7﴿ अन्जाना बरतन

एक इस्लामी भाई का कहना है कि (**7 शव्वालुल मुकर्रम 1427 हि. 31 अक्तूबर 2006**) बरोज़ मंगल बाबुल मदीना (कराची) में स-ह़री के वक़्त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िर था । **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दस्तर ख़्वान पर प्लास्टिक के बरतन को देख कर दरयाफ़्त फ़रमाया, **येह किस का है ?** ख़ादिम इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की, हुज़ूर येह अपनी ही मिल्किय्यत है । आप ने मौजूद इस्लामी भाइयों को तरग़ीब दिलाते हुए इर्शाद फ़रमाया,

कि "**मेरे लिये बरतन अन्जाना था** इस लिये मुझे **तश्वीश** हुई कि कहीं बे एह्तियाती में किसी के घर से ज़रूरतन भेजा गया बरतन हमारे इस्ति'माल में तो नहीं आ रहा।" क्यूं कि किसी के यहां से नियाज़ वग़ैरा पहुंचाने की तरकीब में बरतन आ जाते हैं **मगर शरअ़न इन को ज़ाती इस्ति'माल में लाना मन्अ़ है।** इस लिये मैं ने मा'लूम कर के तशफ़्फ़ी कर ली।"

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रहमत हो और इन के सदके हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾8﴿ अनोखा बयान

पाकिस्तान एरफ़ोर्स के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि ग़ालिबन 1982 ई. की बात है, मेरा दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्तगी का इब्तिदाई दौर था और तन्ज़ीमी तरकीब से ना वाक़िफ़ था। मेरी ड्रग कॉलोनी की एक मस्जिद के इमाम साहिब से शनासाई थी। एक रोज़ बाहमी मश्वरे से ख़ुद ही तै कर के बिग़ैर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को इत्तिलाअ़ किये नमाज़े फ़ज्र में ए'लान कर दिया कि आज बा'द नमाज़े मग़रिब हमारी मस्जिद में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान होगा। फिर नमाज़े ज़ोह्‌र के बा'द हम **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को बयान की इत्तिलाअ़ देने नूर मस्जिद पहुंचे तो आप मौजूद न थे। हम एक रुक्आ़ किसी को येह कह कर दे आए कि **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه को दे देना, उस में येह तहरीर था कि हम ने आज बा'द नमाज़े मग़रिब आप का बयान

अपनी मस्जिद में रखा है और इस का ए'लान भी कर दिया गया है। हम आप को लेने हाज़िर हुए थे मगर आप मौजूद न थे लिहाज़ा येह रुक़्आ दे कर जा रहे हैं, आप मग़रिब में ज़रूर तशरीफ़ लाइयेगा। नमाज़े मग़रिब में लोग काफ़ी जम्अ़ हो चुके थे। कुछ देर बा'द **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه क़ाफ़िले समेत तशरीफ़ ले आए और बयान फ़रमाया, हम जब मुलाक़ात के लिये हाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, कि बयान के लिये रुक़्आ हम ले कर हाज़िर हुए थे तो आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुस्कुरा कर अपनी डायरी निकाल कर दिखाई कि मैं ने पूरे माह के बयान की तारीख़ें दे रखी हैं। अभी भी मेरा बयान किसी और मस्जिद में था, मगर मैं ने रुक़्आ पढ़ कर अन्दाज़ा लगाया कि येह कोई नए इस्लामी भाई हैं। येह सोच कर कि इन का दिल न टूट जाए हाज़िर हो गया और दूसरी मस्जिद में चूंकि ज़िम्मादारान ने बयान रखा था, वहां किसी और मुबल्लिग़ की तरकीब बना दी। سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ ! क़ुरबान जाइये आप की आ़जिज़ी और इन्फ़िरादी कोशिश के अन्दाज़ पर। ऐसा लगता है कि आप की **निगाहे विलायत** उस शख़्स के रोशन मुस्तक़्बिल को देख रही थी जो ब ज़ाहिर अनोखे अन्दाज़ से बयान के लिये पहुंचा था, उस इस्लामी भाई के साहिब ज़ादे जामिअ़तुल मदीना से फ़ारिग़ हो कर कुछ अ़र्सा दारुल इफ़्ता में अपने फ़राइज़ अन्जाम देते रहे और ता दमे तह़रीर दोनों ख़ुश नसीब बाप बेटे **पाकिस्तान इन्तिज़ामी काबीना** के रुक्न की हैसिय्यत से म-दनी कामों की ब-र-कतों से मुस्तफ़ीज़ हो कर दूसरों को भी मुस्तफ़ीज़ कर रहे हैं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾9﴿ हज़ारों के मज्मअ़ में मुआ़फ़ी

ज़िलअ़ मुज़फ़्फ़र गढ़ (पंजाब) के क़स्बा गुजरात के मुक़ीम इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : ग़ालिबन 1988 में पता चला कि क़िब्ला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "कोट अद्दू" बयान के लिये तशरीफ़ ला रहे हैं। हमारे चचा ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! मुलतान से "कोट अद्दू" जाते हुए रास्ते में हमारा क़स्बा आता है, अगर करम फ़रमा दें और हमारे घर की दा'वत क़बूल फ़रमा लें तो मेह्रबानी होगी। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने शफ़्क़त फ़रमाते हुए हां कर दी और यूं हमारे क़स्बे में आने का तै हो गया। सारे ख़ानदान में ख़ुशी की लहर दौड़ गई और क़स्बे में हर त़रफ़ येह धूम मच गई कि ज़माने के वली तशरीफ़ ला रहे हैं। घर के अफ़राद ने ख़ुशी में नए कपड़े पहने, घर को साफ़ करने और सजाने का एहतिमाम किया गया और मैदान में पानी का छिड़काव करवाया गया। इन्तिज़ार होता रहा मगर आप तशरीफ़ न ला सके। सब को तश्वीश हुई कि "**अल्लाह** ख़ैर करे" वक़्त गुज़रने के बा'द वालिद और चचा इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये "कोट अद्दू" रवाना हो गए।

इज्तिमाअ़ कसीर था, जब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मन्च पर तशरीफ़ लाए और आप की नज़र मेरे चचा पर पड़ी तो आप ने हज़ारों लोगों के सामने चचा के आगे हाथ जोड़ लिये और फ़रमाया **मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें** मैं आप के घर ह़ाज़िर न हो सका, आप की दिल आज़ारी हुई होगी। आ़जिज़ी का येह अन्दाज़ देख कर चचा की आंखों से आंसू बह निकले, बा'द में मा'लूम हुवा कि ड्राइवर की ग़-लती से "कोट अद्दू" के लिये वोह रास्ता इख़्तियार किया गया जिस रास्ते में

हमारा क़स्बा नहीं पड़ता था और यूं सब दूसरे रास्ते से ''कोट अद्दू'' जा पहुंचे। अब वक़्त इतना हो चुका था कि वापसी मुम्किन न थी।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾10﴿ मैं अ़त्तारी क्यूं बना ?

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम डॉक्टर साह़िब के बयान का खुलासा है कि मेरी लियाक़त नेशनल हस्पताल (कराची) में ड्यूटी है। एक बार कोई आ़लिम साह़िब तशरीफ़ लाए और मैं ने उन के सामने अपनी **''अ़त्तारी निस्बत''** का इज़्हार किया तो उन्हों ने पूछा कि क्या आप **''इल्यास क़ादिरी साह़िब''** के मुरीद हैं। मैं ने अ़र्ज़ की : जी हां और मेरे मुरीद होने का मुआ़-मला भी अनोखा है। हुवा यूं कि एक रोज़ क़िब्ला **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه किसी मरीज़ की इ़यादत के लिये हमारे यहां तशरीफ़ लाए। मुझे शख़्सिय्यात से ऑटोग्राफ़ लेने का जुनून की ह़द तक शौक़ था जिस के लिये मैं ने हस्पताल का एक **रजिस्टर** मुख़्तस किया हुवा था। मैं ने वापसी के वक़्त वोह **रजिस्टर** खोल कर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सामने कर दिया कि ऑटोग्राफ़ से नवाज़ दें। आप ने **रजिस्टर** बन्द करने के बा'द अपनी जेब से म-दनी पेड निकाला और उस पर जो कुछ तह़रीर फ़रमाया उस का मफ़्हूम येह है कि येह रजिस्टर हस्पताल के कामों के लिये मख़्सूस है, आप को ऑटोग्राफ़ लेने के लिये नहीं दिया गया। साथ में कुछ दुआ़एं तह़रीर फ़रमा कर रुक़्आ़ मुझे अ़त़ा फ़रमा दिया। मैं इस क़दर मु-तअस्सिर हुवा कि फ़ौरन आप के ज़रीए़ मुरीद हो कर **''अ़त्तारी''** बन गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾11﴿ ट्रक की बजरी

नवाब शाह (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि एक बार **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के हमराह चन्द इस्लामी भाई कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे। ख़ुश क़िस्मती से मैं भी साथ था। एक गली से गुज़रते हुए आगे **बजरी** पड़ी हुई नज़र आई। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया कि अगर हम यहां से गुज़रेंगे तो ख़दशा है कि **बजरी** का कुछ ह़िस्सा फैल कर ज़ाएअ़ हो जाएगा लिहाज़ा मुनासिब येह है कि हम दूसरी जगह से निकल जाएं, चुनान्चे दूसरी गली का रास्ता इख़्तियार किया गया।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾12﴿ अजमेरी गाएं

ह़ैदरआबाद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है कि मुझे (**1420 हि. 1999 ई.** में) आ़शिक़ाने रसूल के हमराह हिन्द के सफ़र की सआ़दत मिली। **सुल्त़ानुल हिन्द** ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه के मज़ारे पुर अन्वार की ज़ियारत के लिये **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इमारत में जो क़ाफ़िला रवाना हुवा मैं

भी ख़ुश क़िस्मती से उस में शामिल था। रात कमो बेश **03 : 00** बजे **अजमेर शरीफ़** के स्टेशन पर उतर कर मुत़लूबा मक़ाम तक पहुंचने के लिये पैदल रवाना हुए। **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बरह्ना पा थे, येह देख कर तक़रीबन शु-रका ने भी अ-दबन अपने पाउं से चप्पल उतार दिये। चलते चलते जब एक गली में दाख़िल होने लगे तो देखा कि **"चन्द गाएं"** बैठी हुई हैं। आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने क़ाफ़िले को आगे बढ़ने से रोकते हुए इर्शाद फ़रमाया कि हमारे इस गली से गुज़रने से **"गाएं"** तश्वीश में मुब्तला होंगी, इन के खड़े हुए कान इस बात की निशान देही कर रहे हैं। आख़िर कार मत़लूबा मक़ाम तक पहुंचने के लिये दूसरी गली में दाख़िल हो गए।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه न सिर्फ़ ख़ुद हुक़ूक़ुल इबाद से मु-तअ़ल्लिक़ ख़ास एह्तियात़ फ़रमाते हैं बल्कि मु-तअ़ल्लिक़ीन को भी तवज्जोह दिलाते हुए तरग़ीब के म-दनी फूलों से नवाज़ते रहते हैं। इस ज़िम्न में आप के इर्शादात मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं।

﴾13﴿ सदाए मदीना के वक़्त एह्तियात़

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه इर्शाद फ़रमाते हैं कि अज़ाने फ़ज्र के बा'द बिग़ैर मेगाफ़ोन दो दो इस्लामी भाई **सदाए मदीना** लगाएं। (मुसल्मानों को नमाज़े फ़ज्र के लिये सदा लगा कर उठाने को दा'वते इस्लामी की इस्तिलाह़ में सदाए मदीना कहा जाता है)। **आप** फ़रमाते हैं : मगर इस बात का ख़याल रखिये कि इतनी **ज़ोरदार** आवाज़ें न हों कि मरीज़ों,

बच्चों और जो इस्लामी बहनें घर में नमाज़ में मश्गूल हों या पढ़ कर दोबारा लैट गई हों, **उन को तश्वीश हो ।** दर्स बयान करने ना'त शरीफ़ पढ़ने और स्पीकर चलाने वग़ैरा में हमेशा नमाज़ियों, तिलावत करने वालों और सोने वालों की ईज़ा रसानी से बचना **शरअ़न वाजिब** है । कहीं ऐसा न हो कि हम ज़ाहिरी इबादत से ख़ुश हो रहे हों मगर उस में दूसरों की परेशानी का बाइस बन कर ह़क़ीक़त में مَعَاذَاللهعَزَّوَجَلَّ **गुनाहगार और दोज़ख़ के ह़क़दार बन रहे हों ।**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْاعَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾14﴿ दर्द भरी इल्तिजा

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه रिसाला **"ना'त ख़्वानी के 12 म-दनी फूल"** के आख़िर में हुक़ूकुल इबाद से मु-तअ़ल्लिक़ अहम मुआ-मलात पर तवज्जोह दिलाते हुए फ़रमाते हैं : बेहतर येही है कि मह़ल्ले में बिग़ैर **स्पीकर के ना'त ख़्वानी** करें, अपने ज़ौक़ व शौक़ की ख़ातिर अहले मह़ल्ला को **ईज़ा** न दें । बा'ज़ **बच्चों** की नींद कच्ची होती है उन से मा'मूली सी आवाज़ भी बरदाश्त नहीं होती, फ़ौरन रोना शुरूअ़ कर देते हैं जिस से घर वालों को सख़्त परेशानी का सामना होता है, नीज़ घरों में ऐसे **मरीज़** भी होते हैं जो बचारे नींद की गोलियां खा कर बिस्तर पर पड़े रहते हैं । **तु-लबा** को सुब्ह़ ता'लीम गाहों, और दीगर अफ़राद को काम धन्दों पर जाना होता है । ऐसे में अगर मह़ल्ले के अन्दर **"साउन्ड सिस्टम"** पर ज़ोरो शोर से मह़फ़िल जारी हो तो मजबूरों और मरीज़ों की **सख़्त दिल आज़ारी का इम्कान रहता है ।** अक्सर

मुरव्वत में या इज्तिमाअ़ करवाने वाले के दब-दबे के बाइ़स **सहम** कर चुप हो रहते हैं।

स्पीकर की कान फाड़ डालने वाली आवाज़ पर एह़तिजाज करने वालों के लिये ऐसी मिसाल देना क़त्अ़न मुनासिब नहीं है कि "शादियों में भी लोग **फ़िल्मी गीत** ज़ोरो शोर से चलाते हैं, उन को कोई क्यूं मन्अ़ नहीं करता ! हम आक़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की **सना ख़्वानी** करते हैं तो लोगों को तक्लीफ़ होने लगती है।" مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ येह खुला बोहतान है। कोई मुसल्मान ख़्वाह कितना ही गुनाहगार क्यूं न हो उस को हरगिज़ **आक़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **की सना ख़्वानी से तक्लीफ़ नहीं हो सकती।** शिकायत सिर्फ़ स्पीकर की आवाज़ से है। जिस मीठे मीठे **आक़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की हम ना'त ख़्वानी कर रहे हैं और इस में सिर्फ़ "**मज़ा**" लेने के लिये **साउन्ड सिस्टम** लगा रखा है अगर इस वज्ह से पड़ोसी अज़िय्यत पा रहे हैं तो यक़ीनन प्यारे **आक़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी खुश नहीं। दो चार मह़ल्ले दारों से इजाज़त ले लेना क़त्अ़न काफ़ी है। दूध पीते **बच्चों**, इन की **माओं** और दर्दे सर से **तड़पते**, बुख़ार में **तपते** और बिस्तरों पर बेचैनी से लोटते **मरीज़ों** से कौन इजाज़त लाएगा? नीज़ येह भी ह़क़ीक़त है कि फ़िल्मी गानों के शोर से भी लोगों को परेशानी होती है मगर डर के मारे सब्र कर के पड़े रहते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ फ़रमाते हैं, "ग़ालिबन दा'वते इस्लामी के अवाइल की बात है, मेरा **पड़ोसी** बहुत ज़ोर से गाने बजाता था। मुझे इस से बेहद **तक्लीफ़** होती थी ह़त्ता कि **एक बार तो मैं रो पड़ा था।** उस को समझाता था मगर मेरी बे बसी पर उस को रह़म न आता था। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस बेचारे को **मुआ़फ़** फ़रमाए और उस की

बख़्शिश करे।" अब हर दुख्यारा दुआ़एं दे येह भी ज़रूरी नहीं बल्कि किसी के यहां शादी के मौक़अ़ पर होने वाले इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में साउन्ड सिस्टम की घन-गरज से अगर किसी बूढ़ी मरीज़ा को ईज़ा पहुंचे तो हो सकता है वोह **बद-दुआ़ दे** और यूं مَعَاذَاللہعَزَّوَجَلَّ **शादी ख़ाना बरबादी** हो जाए ! बहर ह़ाल येह हम सब को याद रखना चाहिये कि हुक़ूक़ुल इबाद का मुआ़-मला **हुक़ूक़ुल्लाह** से **सख़्त तर** है। इबादात में भी हुक़ूक़ुल इबाद का ख़याल रखना होता है, यहां तक कि अगर सोने वाले को ईज़ा होती हो तो **बुलन्द आवाज़ से तिलावत की भी शरअ़न इजाज़त नहीं ।** इसी त़रह़ अगर मरीज़ों और सोने वालों को तक्लीफ़ होती हो तो **स्पीकर बल्कि यूं ही बुलन्द आवाज़ से भी ना'त शरीफ़ नहीं पढ़ सकते** और ऐसे मौक़अ़ पर ईको साउन्ड और भी सख़्त सख़्त तक्लीफ़ देह है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम मुसल्मानों को हटधर्मी और बे जा ज़िद से मह़फ़ूज़ व मामून फ़रमाए।

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾15﴿ मुश्किल का ह़ल

मीरपूर ख़ास (बाबुल इस्लाम सिन्ध) के एक इस्लामी भाई **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ की ज़ियारत के लिये ह़ाज़िर हुए तो आप ने उन से फ़रमाया कि "आप के शह़र के एक इस्लामी भाई मुलाक़ात की क़ित़ार के बीच में दाख़िल हो गए। उन के क़रीब आने पर मैं ने उन से मुलाक़ात नहीं की क्यूं कि इस से उन की ह़क़ त-लफ़ी हो

जाती जो पहले से क़ित़ार में मौजूद थे। मुझे लगता है कि उन का दिल दुखा है, हो सकता है वोह नाराज़ भी हो गए हों, उन्हें ढूंडिये ताकि **मैं उन से मुआ़फ़ी मांगूं।"**

उस इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की : "हुज़ूर ! अभी शायद वोह मुश्किल ही मिलें।" **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : "किसी त़रह़ भी उन्हें तलाश करें।" चुनान्चे वोह इस्लामी भाई काफ़ी तलाश के बा'द मायूस लौटे। **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया, "आप जब घर वापस जाएं तो उन्हें तलाश कर के फ़ोन पर या तह़रीरन अगर मुझे मुआ़फ़ी मिलने का "**बिशारत नामा**" दिला दें तो मुझ पर एह़सान होगा"

कुछ अ़र्से बा'द मज़्कूरा इस्लामी भाई मिल गए। जब उन्हें सारी बात बताई गई तो वोह रो पड़े कि **मैं और अमीरे अहले सुन्नत से नाराज़ ?** फिर कहने लगे कि मुझ में इतनी जुरअत कहां कि मैं इस त़रह़ (मुआ़फ़ी नामा) लिख कर दूं। इस के बा'द उन्हों ने कुछ लिखा और ख़ुश्बू लगा कर उस मुबल्लिग़ को अपना मक्तूब **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की ख़िदमत में पेश करने के लिये दे दिया। जब उस मुबल्लिग़ ने शैख़े त़रीक़त **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर बताया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह इस्लामी भाई मिल गए तो आप ने मुबल्लिग़ को सीने से लगा लिया और बहुत ख़ुश हुए। फिर पूछा : "क्या उन्हों ने मुझे मुआ़फ़ कर दिया ?" मुबल्लिग़ ने उस इस्लामी भाई की तह़रीर पेश की तो आप ने उसे पढ़ा और चूमा फिर फ़रमाया : **आप ने मेरी बहुत बड़ी मुश्किल ह़ल कर दी, अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **का बड़ा करम हो गया, इस की वज्ह से मैं शदीद ज़ेह्नी अज़िय्यत में मुब्तला था।"**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾16﴿ कमाल द-रजा एह़तियात़

दौरए ह़दीस के एक त़ालिबे इ़ल्म की फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ की एक जिल्द चन्द दिन **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه के ज़ेरे मुत़ा-लआ़ रही। आप ने **फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़** की जिल्द मअ़ रुक़्आ़ जब वापस फ़रमाई तो त़ालिबे इ़ल्म रुक़्आ़ पढ़ कर शश्दर रह गए और जज़्बाते तअस्सुर से पलकें भीग गईं। **उस** रुक़्ए़ में कुछ यूं तह़रीर था :

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم، सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार** क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنْهُ की जानिब से मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे ....زِیْدَ مَجْدُهٗ की ख़िदमत में शुक्रिय्या भरा सलाम।

आप की फ़तावा र-ज़विय्या जि. .... से मत़्लूबा इ़बारात के इ़लावा भी इस्तिफ़ादा किया, ख़ास ख़ास कलिमात व फ़िक़्रात को **ख़त़ कशीदा** करने (या'नी अल्फ़ाज़ के नीचे लकीर खींचने) की आ़दत है मगर **मजाज़** न होने के बाइ़स (या'नी इजाज़त न लेने की वज्ह से) **मुज्तनिब** रहा (या'नी बचता रहा) मगर बे एह़तियात़ी के सबब एक सफ़्ह़े के ऊपर की जानिब **मा'मूली सा काग़ज़** फट गया, बसद नदामत मा'ज़िरत ख़्वाह हूं, उम्मीद है **मुआ़फ़ी की ख़ैरात** से मह़रूम नहीं फ़रमाएंगे। काग़ज़ इतना कम शक़ हुवा है कि ग़ालिबन ढूंडने पर भी न मिल सके। इ़लावा अज़ीं भी जो हुक़ूक़ तलफ़ हुए हों मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। दैन हो तो वुसूल कर लीजिये। (रुक़्ए़ का अ़क्स अगले सफ़्ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم۔ سگِ مدینہ
محمد الیاس عطار قادری رضوی عُفِیَ عنہٗ کی
جانب سے عزیز میٹھے میٹھے مدنی بیٹے محمد
.... عطاری زِیدَ مَجْدُہٗ کی خدمت
میں شکریہ مع اسلام، آپ کی فتاویٰ رضویہ
ج ۲ سے مطلوبہ عبارات کے حوالہ جات
استفادہ کیا، خاص خاص کلمات و [illegible]
کو خط کشیدہ کرنے کی عادت ہے مگر مجاز نہ
ہونے کے باعث مجتنب رہا مگر
بے احتیاطی کے سبب ایک صفحے کے اوپر کی
جانب معمولی سا کاغذ پھٹ گیا، بعدِ
ندامت معذرت خواہ ہوں، امید ہے کہ آپ
کی خیرات سے محروم نہیں فرمائیں گے۔ کاغذ اتنا کم
ہے کہ غالباً ڈھونڈنے پر بھی نہ مل سکے۔
علاوہ ازیں بھی جو حقوق تلف ہوئے ہوں
معاف فرما دیجئے۔ دَین ہو تو وصول کر لیجئے۔

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾17﴿ ख़ादिमीन से मुआ़फ़ी

14 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1424 हि. आप ने मु-तअ़ल्लिक़ा ह़ारिसीन, ख़ादिमीन, और जुम्ला इस्लामी भाइयों को रुक़्आ़ इनायत फ़रमाया जिस में इन्तिहाई आ़जिज़ी के साथ मुआ़फ़ी त़लब की गई थी। (रुक़्ए़ का अ़क्स मुला–ह़ज़ा फ़रमाइये)

جن جن کو ممکن ہو پڑھا دیں:
تمام حارسین، خادمین کتاب گھر والے
اور جملہ اسلامی بھائیوں کی خدمات میں
السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ
آہ! گناہوں سے بھرپور نامۂ اعمال کی تبدیلی
میری زبان ہاتھ یا جسم کے کسی بھی
عضو سے جس کسی کو جو بھی ایذا پہنچی
ہو برائے خدائے مدینہ معاف فرما دیں
ہر ہر وہ معاملہ جس سے آپ کی دل آزاری
یا حق تلفی ہوئی ہو اُس سے معافی کا
بھکاری بن کر تحریراً حاضر خدمت ہوں
میری جھولی میں معافی کی بھیک ڈال کر
اللہ عزوجل کی بارگاہ میں بھی میری مغفرت کی
سفارش فرما دیجئے۔ سگِ مدینہ
حقوق پر مسلمانوں کو پیشگی معاف کر چکا ہوں۔

हिन्दी : जिन जिन को मुम्किन हो पढ़ा दें : तमाम ह़ारिसीन, ख़ादिमीन किताब घर वाले और जुम्ला इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهٗ आह ! गुनाहों से भरपूर नामए आ'माल की तब्दीली, मेरी ज़बान हाथ या जिस्म के किसी

भी उ़ज़्र से जिस किसी को जो भी ईज़ा पहुंची हो बराए ख़ुदा मदीना मुआ़फ़ फ़रमा दे । हर हर वोह मुआ़-मला जिस से आप की दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी हुई हो उस से मुआ़फ़ी का भिकारी बन कर तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत हूं। मेरी झोली में मुआ़फ़ी की भीक डाल कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में भी मेरी मग़्फ़िरत की सिफ़ारिश फ़रमा दीजिये। मैं ने अपने हुक़ूक़ हर मुसल्मान को पेशगी मुआ़फ़ कर रखे हैं।

दस्त-ख़त़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾18﴿ 5 रुपै वाजिबुल अदा

हैदरआबाद बाबुल इस्लाम (सिन्ध) के एक मुबल्लिग़ ने **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के एक मक्तूब के मु-तअ़ल्लिक़ बताया जो (**15.03.79**) को कारोबारी सिल्सिले में भेजा गया था। इस मक्तूब में भी आप ने **हुक़ूक़ुल इबाद** से मु-तअ़ल्लिक़ एह़तियात़ और नेकी की दा'वत को पेशे नज़र रखा है । ग़ालिबन माल की अदाएगी से मु-तअ़ल्लिक़ रक़म तै होने के बा'द सुवारी **5** रुपै कम उजरत में मिल गई थी इस लिये मक्तूब में बा'दे सलाम कुछ इस त़रह़ तह़रीर था :

5 रुपै वाजिबुल अदा हैं, माल अच्छी त़रह़ **देख लें, गिनती** भी हो सके तो ज़रूर कर लें, **कमी बेशी या नक़्स** हो तो भी ज़रूर लिखें, आख़िर में **पांचों वक़्त नमाज़** की अदाएगी की ताकीद भी फ़रमाई ।

इस तह़रीर से अन्दाज़ा होता है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इब्तिदा ही से इस म-दनी मक़्सद **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है"** को अपना मक़्सदे ह़यात

बना लिया था **जिस** की ब-र-कतें तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** की सूरत में ज़ाहिर हुईं और येह म-दनी तह़रीक दुन्या भर में **म-दनी इन्आ़मात** की ख़ुश्बूओं से मुअ़त्त़र मुअ़त्त़र **म-दनी क़ाफ़िलों** के ज़रीए़ क़ुरआनो सुन्नत की दा'वत आ़म करने के लिये कोशां है। (इस मक्तूब के कुछ ह़िस्से का अ़क्स अगले सफ़्ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)
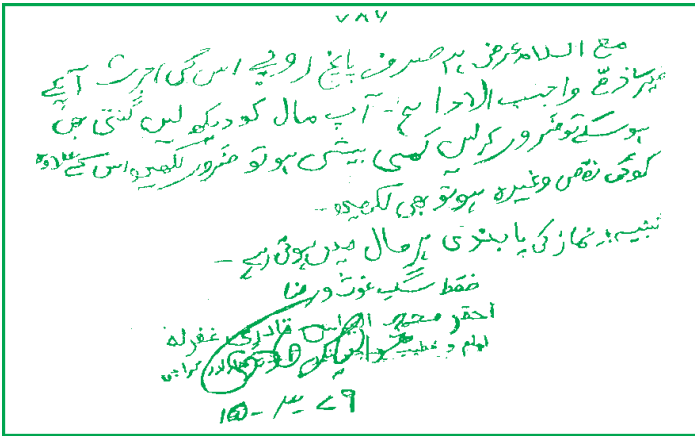
٧٨٧

مع السلام عرض ہے صرف پانچ روپے اس کی اجرت آپ کے
ہمارے ذمہ واجب الادا ہے۔ آپ مال کو دیکھ لیں گنتی جو
ہو سکے تو ضرور کر لیں کمی بیشی ہو تو ضرور لکھیں اس کے علاوہ
کوئی نقص وغیرہ ہو تو بھی لکھ دو۔
تنبیہ: نماز کی پابندی ہر حال میں ہوتی رہے۔
فقط سگ غوث و رضا
احقر محمد الیاس قادری غفرلہ
امام و خطیب
١٥-١٢-٧٩

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾19﴿ अमानत

1420 हि. में हिन्द के म-दनी क़ाफ़िले से वापसी पर किसी ने शैख़े त़रीक़त, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के लिये मदीनतुल औलिया (अह़मदआबाद शरीफ़) से सिवय्यों का बन्डल तोह़्फ़तन भेजा जो आप की ख़िदमत में पेश कर दिया गया और आप ने ह़स्बे आ़दत इस्लामी भाइयों में तक़्सीम फ़रमाना शुरूअ़ कर दिया। मगर बा'द में येह **ग़लत़ फ़ेहमी** पैदा हो गई कि येह सिवय्यां किसी और की "**अमानत**"

थीं ह़ालां कि ह़क़ीक़तन सिवय्यां आप ही को तोह़फ़े में आई थीं। इस सिलसिले में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तश्वीश के इज़ाले के लिये एक तह़रीर एह़तियात़न हैदरआबद (बाबुल इस्लाम सिन्ध) रवाना की। (इस तह़रीर का अ़क्स अगले सफ़ह़े पर मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

۷۸۶ قفل مدینہ
حاجی محمد - - - رضا عطار
کی خدمت میں مع السلام عرض ہے
بہت بڑا بنڈل احمد آباد کی سویوں
کا ملا۔ ہم نے تصرف شروع کر دیا
بعد میں پتا چلا یہ امانت تھی۔
ہم نے باقیماندہ سویاں محفوظ کرلی
ہیں۔ مہربانی فرما کر جلد اطلاع
فرمائیں کہ یہ کس کی امانت
ہے؟ جو تحفے وغیرہ میں دے دی
گئیں ان کا کیا کریں؟

हिन्दी : ह़ाजी मुह़म्मद ... रज़ा अ़त्तारी की ख़िदमत में मअ़स्सालम अ़र्ज़ है, बहुत बड़ा बन्डल अह़मदआबाद की सिवय्यों का मिला। हम ने तसर्रुफ़ शुरूअ़ कर दिया बा'द में पता चला येह अमानत थी। हम ने बाक़ी मान्दा सिवय्यां मह़फ़ूज़ कर ली हैं। मेहरबानी फ़रमा कर जल्द इत्तिलाअ़ फ़रमाएं कि येह किस की अमानत है ? जो तोह़फ़े वग़ैरा में दे दी गईं उन का क्या करें ? दस्त-ख़त़

इस रुक़्ए़ में **सुवाल** से बचने का कैसा मोह़तात़ अन्दाज़ है "**जो तोह़फ़े वग़ैरा में दे दी गई उन का क्या करें ?**" फिर आप इस मस्अले के ह़ल के लिये किस क़दर बेचैन हैं कि पीछे लिखा "**आज ही पहुंचा दें या फ़ोन पर पढ़ कर सुना दें**"।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾20﴿ बड़ी रात पर मुआ़फ़ी

एक इस्लामी भाई ने बताया कि एक मर्तबा **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मेरी किसी कोताही पर मुझे तम्बीह फ़रमाई। मैं तो ख़ुशी से फूले नहीं समा रहा था कि आप ने मुझे मेरा नाम ले कर मुख़ात़ब फ़रमाया और इस्लाह़ के म-दनी फूलों से नवाज़ा, मगर कुछ देर बा'द **आप** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने मुझे एक रुक़्आ़ अ़त़ा फ़रमाया। (उस तह़रीर का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

الحاج حافظ ---- کی خدمت
میں ندامت بھرا سلام
آپ کو ڈانٹ دیا اس
پر سخت شرمندہ ہوں
آج بڑی رات آرہی ہے -
رنجیدہ ہو تو للہ مجھے
معاف معاف اور معاف
فرما دیں - سگِ مدینہ

हिन्दी : अलह़ाज ह़ाफ़िज़ ... की ख़िदमत में नदामत भरा सलाम। आप को डांट दिया इस पर सख़्त शर्मिन्दा हूं आज बड़ी रात आ रही है। रन्जीदा न हों। और मुझे मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दें। सगे मदीना

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾21﴿ शबे मे'राज में मुआ़फ़ी

एक मुबल्लिग़ जिन्हें **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत पाने की सआ़दत मिलती रहती है और इस की ब-र-कत से उन्हें वक़्तन फ़ वक़्तन ह़ौसला अफ़्ज़ाई के महक्ते फूलों के साथ साथ इस्लाह़ के म-दनी मोती भी नसीब हो जाते हैं। यादगारे शबे मे'राजुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 27 र-जबुल मुरज्जब 1424 सि.हि. **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की त़रफ़ से आ़जिज़ी से भरपूर एक रुक़्आ़ मौसूल हुवा। (उस तह़रीर का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم سگ مدینہ
محمد الیاس عطار قادری رضوی عفی عنہ
کی جانب سے میری آنکھوں کے تارے
حاجی محمد ---- رضا عطاری کی خدمت
میں گنبدِ خضرا کو چومتا ہوا جھومتا ہوا
سلام ۔ آج یادگارِ شبِ معراج ہے
قبولیت کی رات ہے، مجھے اس بات کا احساس
ہے کہ میں آپ کو خوش رکھنے میں ناکام
ہو جاتا ہوں ڈانٹ بھی دیتا ہوں
آپ کا دل دکھ بھی جاتا ہوگا براہِ کرم! مجھے
تمام وہ حقوق جن کو میں نے
تلف کیا ہو معاف فرما دیں
دعائے مغفرت و حفظِ زبان کی دعا فرما دیں

हिन्दी : بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنۡہُ की जानिब से मेरी आंखों के तारे ह़ाजी मुह़म्मद ...... रज़ा अ़त्तारी की ख़िदमत में गुम्बदे ख़ज़रा को चूमता हुवा झूमता हुवा सलाम। आज यादगारे शबे मे'राज है। क़बूलिय्यत की रात है। मुझे इस बात का एह़सास है कि मैं आप को ख़ुश रखने में नाकाम हो जाता हूं। डांट भी देता हूं आप का दिल दुख भी जाता होगा। बराए करम ! मुझे तमाम वोह हुक़ूक़ जिन को मैं ने तलफ़ किया हो मुआ़फ़ फ़रमा दें। दुआ़ए मग़्फ़िरत व ह़िफ़्ज़े ज़बान की दुआ़ फ़रमाया करे।

दस्त-ख़त़

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾22﴿ अपने से छोटों से मुआ़फ़ी

क़िब्ला अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ वक़्तन फ़ वक़्तन अपने मु-तअ़ल्लिक़ीन की कोताहियों पर मह़ब्बत व शफ़्क़त के साथ उन्हें इस्लाह़ के म-दनी फूलों से नवाज़ते रहते हैं जिस पर मु-तअ़ल्लिक़ीन तो अपनी क़िस्मत पर नाज़ां होते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ऐसी आ'ला सोह़बत अ़त़ा फ़रमाई मगर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ फिर भी अक्सर आ़जिज़ी फ़रमाते हुए एह़तियात़न मु-तअ़ल्लिक़ीन से मुआ़फ़ी भी मांग लेते हैं। एक रोज़ चन्द मु-तअ़ल्लिक़ीन के बक़ौल उन्हों ने अपनी बे एह़तियात़ियों को मद्दे नज़र रखते हुए अमीरे अहले सुन्नत की دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ बारगाह में मुआ़फ़ी की तह़रीरी दर-ख़्वास्त पेश की, जिस पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ की त़रफ़ से उन्हें एक रुक़्आ़ मौसूल हुवा। (जिस का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाएं)।

میرے رُفقا اسلامی بھائیوں کی خدمات میں
غم میں ڈوبا ہوا سلام،
وقتاً فوقتاً آپ کو ڈانٹ
ڈپٹ کر دیتا، دل دُکھا بیٹھتا ہوں
پھر افسوس بھی ہوتا ہے مگر تیر کمان
سے نکل چکا ہوتا ہے۔ میں ہاتھ جوڑ کر
آپ سب سے معافی کا طلبگار ہوں۔ شبِ معراج
کا صدقہ مجھے معاف کر دیجئے۔ میری مغفرت
سلامتی اور حقیقی قفلِ مدینہ کی
دعا فرماتے رہیں۔ والسلام مع الاکرام۔
سگِ مدینہ عُفِیَ عنہ
۲۷ رجب المرجب ۱۴۲۴ھ
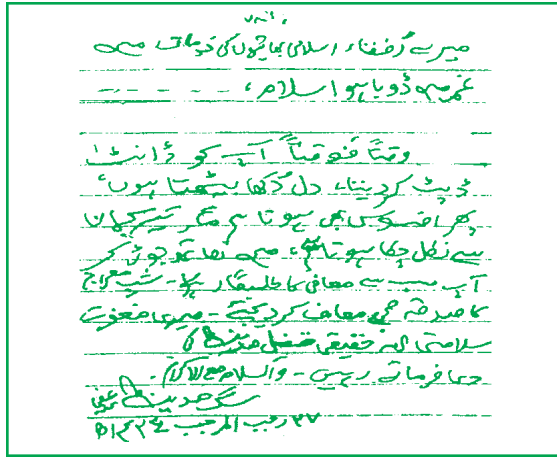
हिन्दी : मेरे रु-फ़क़ा इस्लामी भाइयों की ख़िदमात में ग़म में डूबा हुवा सलाम। वक़्तन फ़ वक़्तन आप को डांट डपट कर देता, दिल दुखा बैठता हूं फिर अफ़्सोस भी होता है मगर तीर कमान से निकल चुका होता है। मैं हाथ जोड़ कर आप सब से मुआ़फ़ी का त़लबगार हूं। शबे मे'राज का सदक़ा मुझे मुआ़फ़ कर दीजिये। मेरी मग़्फ़िरत सलामती और ह़क़ीक़ी क़ुफ़्ले मदीना की दुआ़ फ़रमाते रहें। वस्सलाम मअ़ल इक्राम। सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ 27 र-जबुल मुरज्जब 1424 हि.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾23﴿ ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

13 जुमादिल ऊला 1431 हि. आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में बा'द नमाज़े फ़ज्र, **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه ने किसी मुआ़-मले में नमाज़ पढ़ाने वाले इस्लामी भाई की इस्लाह़ फ़रमाई। वोह इस्लामी भाई इन्तिहाई मसरूर थे कि आप ने मेरी त़रफ़ तवज्जोह फ़रमाई और इस्लाह़ के म-दनी फूलों से नवाज़ा, मगर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه का ख़ौफ़े ख़ुदा मरह़बा कि आप ने बा'दे ज़ोहर उस इस्लामी भाई को एक रुक़्आ़ इनायत फ़रमाया जिस का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

۷۸۶
آج صبح اصلاح کی
خاطر کچھ معروضات پیش
کی تھیں، اس پر دل میں
کھٹکا ہو رہا ہے کہ کہیں
آپ کا دل نہ دکھ گیا ہو،
معافی سے نواز دیجئے
۱۳ جمادی الاولیٰ
۱۴۳۱ھ

हिन्दी : आज सुब्ह़ इस्लाह़ की ख़ात़िर कुछ मा'रूज़ात पेश की थीं, इस पर दिल में खटका हो रहा है कि कहीं आप का दिल न दुख गया हो। मुआ़फ़ी से नवाज़ दीजिये।

13 जुमादल ऊला 1431 हि.

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

﴾24﴿ द-रजा मुअ़ल्लिम से मुआ़फ़ी

एक रुक्ने शूरा के ह़ल्फ़िय्या बयान का लुब्बे लुबाब है कि **25 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1432** हि. **(28-07-2011)** बरोज़ जुम्अ़रात बा'द नमाज़े अ़स्र आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه तरबियती कोर्स के शु-रका से मुलाक़ात फ़रमा रहे थे, दौराने मुलाक़ात मुअ़ल्लिमे द-रजा (या'नी तरबियती कोर्स का द-रजा संभालने वाले) इस्लामी भाई का मोटापा देख कर उन्हें वज़्न कम करने से मु-तअ़ल्लिक़ म-दनी फूल अ़त़ा फ़रमाए। रुक्ने शूरा का कहना है कि बा'द नमाज़े इशा बारगाहे अमीरे

अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه में ह़ाज़िरी की सआ़दत मिली तो आप ने तश्वीश का इज़्हार करते हुए जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस में हर मुसल्मान के लिये तरग़ीब है।

आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया : आज मुलाक़ात में सब के सामने मैं ने जिन्हें वज़्न कम करने से मु-तअ़ल्लिक़ समझाया कहीं उन का दिल न दुख गया हो, इस लिये आप मेरी त़रफ़ से उन से मुआ़फ़ी मांग लेना, फिर आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मक-त-बतुल मदीना से नई शाएअ़ होने वाली ज़ख़ीम किताब **"जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल"** (ह़िस्सए दुवुम) देते हुए फ़रमाया कि येह भी उन्हें तोह़फ़े में दे दीजियेगा, उन का दिल ख़ुश होगा, उस किताब में मह़ब्बत भरा जुम्ला भी लिखा और उस में आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दस्त-ख़त़ भी थे। रुक्ने शूरा का कहना है कि मेरे दिल में ख़याल आया कि काश ! जो फ़रमाया वोह तह़रीर हो जाता तो लोगों के लिये तरग़ीब का सामान होता। **ख़ुदा की क़सम !** अभी में सोच ही रहा था कि यूं लगा जैसे मेरे वलिय्ये कामिल मुर्शिद **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मेरे दिल में पैदा होने वाली ख़्वाहिश को जान लिया हो, फ़ौरन आप ने पेड पर मुआ़फ़ी नामा तह़रीर कर के **रुक्आ़** देते हुए फ़रमाया कि उन्हें येह भी दे दीजियेगा।

रुक्ए़ में तह़रीर था कि "मुआ़फ़ी का त़लब गार हूं। आप के साथ वज़्न कम करने के उ़न्वान पर जो बातचीत हुई उस में कहीं आप को बुरा न लग गया हो, **मुआ़फ़ी** का मुज़्दा सुना दीजिये। दिलजोई के लिये **तोह़फ़तन किताब** ह़ाज़िर है।" جَزَاکَ اللّٰہُ خَیْراً 26 **शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म** 1432 हि. (मुअ़ल्लिमे द-रजा को जब तमाम शु-रका के सामने रुक्आ़ सुना कर पेश किया गया तो आ़जिज़ी और ख़ौफ़े ख़ुदा में डूबी हुई तह़रीर पढ़ कर बे इख़्तियार वोह रो पड़े। इस मौक़अ़ पर वहां मौजूद म-दनी चेनल के केमरा मेन का कहना था कि बैनल अक़्वामी सत़ह़ पर मश्हूर इतनी अ़ज़ीम हस्ती का यूं आ़म इस्लामी भाई से मुआ़फ़ी मांगना देख कर मेरा रोंगटा रोंगटा खड़ा हो गया, तह़रीर का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)
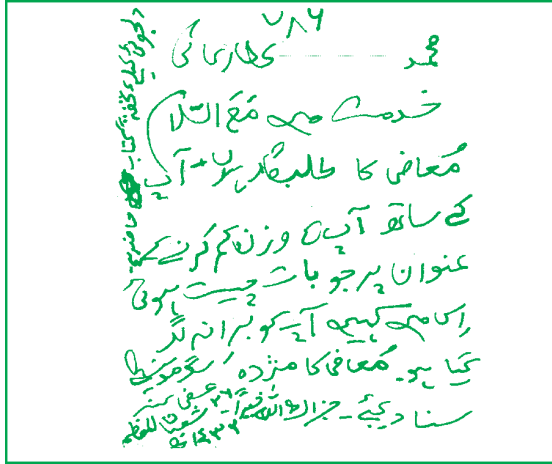
۷۸۶

محمد ------ عطاری کی
خدمت میں مع السلام
معافی کا طلبگار ہوں۔ آپ
کے ساتھ آپ وزن کم کرنے کے
عنوان پر جو بات چیت ہوئی
اس میں کہیں آپ کو برا نہ لگ
گیا ہو۔ معافی کا مژدہ
سنا دیجئے۔ جزاک اللہ

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!   صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾25﴿ आ़जिज़ी व ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ

22 रबीउ़ल अव्वल 1431 हि. अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की बारगाह में कुछ ज़िम्मादाराने जामिआ़तुल मदीना ह़ाज़िर थे, एक म-दनी इस्लामी भाई ने अ़र्ज़ की, कि हमारे हैदरआबाद के त़-लबा अपने अपने किराए पर बाबुल मदीना के तरबियती इज्तिमाअ़ में आए हैं, इस पर **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने तह़सीन के कलिमात अदा करने के बा'द फ़रमाया कि आप का शह्र क़रीब है किराया कम लगता है, पंजाब वाले भी अपने अपने किराए पर आए हैं इन मा'नों में वोह ज़ियादा लाइक़े तह़सीन हैं। कुछ देर बा'द नमाज़े इ़शा के लिये इस्लामी भाई रवाना हो गए।

24 रबीउ़ल अव्वल 1431 हि. वक़्ते स-ह़री मौजूद इस्लामी भाई से **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उन म-दनी इस्लामी भाइयों का मा'लूम फ़रमाया कि वोह कहां हैं ? उन्हें मौजूद न पा कर एक लिफ़ाफ़ा

ज़िम्मादार इस्लामी भाई के ह़वाले करते हुए इर्शाद फ़रमाया कि रात जिन म-दनी इस्लामी भाई से हैदरआबाद के त़-लबा के तअ़ल्लुक़ से गुफ़्त-गू हुई थी उन्हें पहुंचा दीजिये। जब उन म-दनी इस्लामी भाई ने लिफ़ाफ़ा खोला तो उस में मौजूद **100** रुपै का नोट और आ़जिज़ी व ख़ौफ़े ख़ुदा में डूबी तह़रीर पढ़ कर आबदीदा हो गए, उस में कुछ यूं तह़रीर था :

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡم, सगे मदीना **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी عُفِیَ عَنۡهُ की जानिब से मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे...... سَلَّمَهُ الْغَنِی की ख़िदमत में गुम्बदे ख़ज़्रा को चूमता हुवा सलाम।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दीनो दुन्या की ब-र-कतों से मालामाल फ़रमाए आमीन।

22 रबीउ़ल अव्वल **1431** हि. ब शुमूले शुमा कुछ ज़िम्मादाराने **जामिअ़तुल मदीना** तशरीफ़ फ़रमा थे, आप ने फ़रमाया कि हमारे **हैदरआबाद** के त़-लबा अपने अपने किराए पर बाबुल मदीना के तरबियती इज्तिमाअ़ में आए हैं, इस पर तह़सीन के फ़ौरन बा'द मेरे मुंह से निकला कि "आप का शहर क़रीब है **किराया कम** लगता है, पंजाब वाले भी अपने किराए पर आए हैं।"

अपनी सब्क़ते लिसानी पर नादिम हूं, डरता हूं कहीं आप की दिल शिकनी न हो गई हो, अगर येह ईज़ा रसानी थी तो तौबा करता हूं, आप से भी **मुआ़फ़ी** मांगता हूं, मुझे वोह जुम्ला न कहना चाहिये था, बराए करम मुझे **मुआ़फ़** फ़रमा दीजिये। जो इस्लामी भाई उस वक़्त ह़ाज़िर थे मुम्किन हो तो उन को भी मेरी तौबा पर मुत्तलअ़ फ़रमा कर एह़सान बालाए एह़सान फ़रमा दीजिये। चाहें तो उन को मेरी तह़रीर का अ़क्स भी दे सकते हैं, मुझे **मुआ़फ़ी** से नवाज़ कर मुत्तलअ़ फ़रमा दीजिये तो करम बालाए करम होगा।

म-दनी फूल : اَلسِّرُّ بِالسِّرِّ وَالْعَلانِيَةُ بِالْعَلانِيَةِ या'नी ख़ुफ़्या गुनाह की ख़ुफ़्या तौबा और अ़लानिया की अ़लानिया।

(ह़दीसे पाक फ़तावा र-ज़विय्या) (المعجم الكبير للطبرانی، حديث: 331، ج20، ص159)

100 रुपै आप की नज़्र हैं, चाहें तो मिठाई खा कर ग़म ग़लत़ कर लीजिये।

24 रबीउ़ल अव्वल 1431 हि.

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की ख़ौफ़े ख़ुदा से लबरेज़ तह़रीर का अ़क्स अगले सफ़्ह़े पर पेश किया गया है जिसे पढ़ कर शायद कई हुस्सास आ़शिक़ाने रसूल के आंसू पलकों की रुकावट तोड़ कर रुख़्सार पर बह निकलें।

येह तह़रीर हर मुबल्लिग़ और ज़िम्मादार व निगरान बल्कि हर मुसल्मान के लिये मश्अ़ले राह है। काश हम भी इस की ब-र-कत से अपनी ज़िन्दगी में इन एह़तियात़ों को बरूए कार ला सकें।

(इस तह़रीर का अ़क्स मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم ؕ سگِ مدینہ محمد
الیاس عطار قادری رضوی عفی عنہ کی جانب
سے میرے میٹھے میٹھے مدنی بیٹے
کی خدمت میں گنبدِ خضرا کو
چومتا ہوا سلام۔ اللہ عزوجل آپ کو دین و
دنیا کی برکتوں سے مالا مال فرمائے۔ امین۔
۲۴ ربیع النور ۱۴۳۱ھ بشمول شبِ جمعہ
ذمے داران جامعات المدینہ تشریف فرما
تھے آپ نے فرمایا کہ ہمارے حیدرآباد کے طلبہ
اپنے اپنے گھر سے باب المدینہ کے تربیتی اجتماع
میں آگئے۔ اس پر تحسین کے فوراً بعد میرے منہ
سے نکلا کہ آپ کا شہر قریب ہے کرایہ کم
لگتا ہے، پنجاب والے بھی اپنے اپنے گھر سے
آ گئے۔ اپنی سبقتِ لسانی پر نادم ہوں
ڈرتا ہوں کہیں آپ کی دل شکنی نہ (جاری....)

ہو گئی ہو، اگر یہ ایذا رسانی تھی تو توبہ
کرتا ہوں، آپ سے بھی معافی مانگتا ہوں
مجھے وہ جملہ نہ کہنا چاہئے تھا، براہ کرم
مجھے معاف فرما دیجئے۔ جو اسلامی بھائی اُس وقت
حاضر تھے ان کو بھی میری توبہ پر مطلع فرما کر
احسان بالائے احسان فرما دیجئے۔ چاہیں تو
ان کو میری تحریر کی عکس بھی دے دیجئے
مجھے معافی سے نواز کر مطلع فرما دیجئے تو
کرم بالائے کرم ہوگا۔
مدنی پھول

السِّرُّ بالسِّرِّ والعلانیۃُ بالعلانیۃ

یعنی خفیہ گناہ کی خفیہ توبہ اور علانیہ کی علانیہ۔
(حدیث پاک۔ فتاوی رضویہ)

ممکن ہو تو آپ کی نذر ہیں
چاہیں تو مٹھائی کھا کر
غم غلط کر لیجئے۔
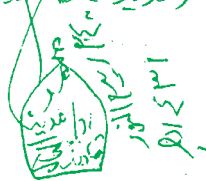
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुरीदीन व मु-तअ़ल्लिक़ीन का अपने पीरो मुर्शिद और अमीर से मुआ़फ़ी मांगना तो समझ में आता है मगर एक ऐसी हस्ती जो **मर्जए़ ख़लाइक़** हो और करोड़ों मुसल्मान उस के दामन से वाबस्ता हो कर उस के मुरीद बन चुके हों, वोह इस त़रह़ आ़जिज़ी अपनाते हुए अपने छोटों तक से मुआ़फ़ी मांगने में आ़र मह़सूस न करे तो येही कहा जा सकता है कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه पर ख़ुसूसी करम है। आप का येह अन्दाज़ हर मुसल्मान के लिये **मश्अ़ले राह** है।

दौराने बयान मुआ़फ़ी त़लब करना

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه अक्सर इज्तिमाआ़त वग़ैरा में भी आ़जिज़ी फ़रमाते हुए मुआ़फ़ी मांगते रहते हैं। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के **1420 सि.हि.** में बाबुल मदीना (कराची) में सिन्ध सत़्ह़ पर होने वाले तीन रोज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने दूसरों से मुआ़फ़ी मांगने की तरग़ीब दिलाते हुए अपने मु-तअ़ल्लिक़ कुछ इस त़रह़ इर्शाद फ़रमाया :

"**जिस** के साथ लोग ज़ियादा मुन्सलिक होते हैं उस से बन्दों की ह़क़ त-लफ़ियों के सुदूर का इम्कान भी ज़ियादा होता है। मुझ से वाबस्तगान की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा है, न जाने कितनों का मुझ से दिल दुख जाता होगा। में **हाथ जोड़ कर** अ़र्ज़ करता हूं कि मेरी ज़ात से किसी की जान माल या आबरू को नुक़्सान पहुंचा हो तो मेहरबानी कर के वोह **बदला** ले ले, या मुझे **मुआ़फ़** कर दे अगर किसी का मुझ पर क़र्ज़ आता हो तो ज़रूर **वुसूल** कर ले, अगर वुसूल नहीं करना चाहता तो **मुआ़फ़ी** से नवाज़ दे।

जो मेरा क़र्ज़दार है मैं अपनी ज़ाती रक़में उस को **मुआ़फ़** करता हूं। ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे सबब से किसी मुसल्मान को **अ़ज़ाब न करना**। जिस ने मेरी दिल आज़ारी की या दिल आज़ारी करेगा, मुझे मारा या आयिन्दा मारेगा, मेरी जान लेने की कोशिश की या आयिन्दा करेगा ह़त्ता कि **शहीद** कर डालेगा, **मैं ने हर मुसल्मान को अपने अगले पिछले हुक़ूक़ मुआ़फ़ किये।** ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू भी मुझ आ़जिज़ व मिस्कीन बन्दे के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे और मेरी वज्ह से किसी को अ़ज़ाब न देना"।

एक बार दौराने इज्तिमाअ़ इर्शाद फ़रमाया : सब इस्लामी भाई जो इस वक़्त सिन्ध के तीन 3 रोज़ा इज्तिमाअ़ में जम्अ़ हैं या INTERNET के ज़रीए़ दुन्या में जहां कहीं मुझे सुन रहे हैं या हर वोह इस्लामी भाई और इस्लामी बहन जो केसिट के ज़रीए़ मुझे (अपनी ज़िन्दगी में जब भी) सुन रहे हैं या मेरा तह़रीरी बयान पढ़ रहे हैं **वोह तवज्जोह फ़रमाएं** कि अगर मैं ने कभी आप की ह़क़ त-लफ़ी की हो तो मुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **मुआ़फ़** फ़रमा दें, बल्कि एह़सान पर एह़सान तो येह होगा कि आयिन्दा के लिये भी **मुआ़फ़ी** से नवाज़ दें। बराए करम ! दिल की गहराई के साथ एक बार ज़बान से कह दीजिये, **"मैं ने मुआ़फ़ किया"**

(माख़ूज़ अज़ रिसाला "ज़ुल्म का अन्जाम" स. 28, 29)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ और दूसरों से मुआ़फ़ी

इसी त़रह़ **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपनी मश्हूरे ज़माना तस्नीफ़ "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" के सफ़ह़ा नम्बर **113** पर अपने हुक़ूक़ मुआ़फ़ करने के साथ साथ पुरसोज़ अन्दाज़ में आ़जिज़ी फ़रमाते हुए मुआ़फ़ी त़लब फ़रमाई है जिस से **आप** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इन्किसारी का अन्दाज़ा होता है। चुनान्चे आप फ़रमाते हैं :

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ! सगे मदीना عُفِيَ عَنْهُ ने रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से अपने क़र्ज़दारों को पिछले क़र्ज़ों, माल चुराने वालों को चोरियों, हर एक को ग़ीबतों, तोहमतों, तज़्लीलियों, ज़र्बों समेत तमाम जानी माली **हुक़ूक़** मुआ़फ़ किये और आयिन्दा के लिये भी तमाम तर **हुक़ूक़** पेशगी ही मुआ़फ़ कर दिये हैं चुनान्चे **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना का मत़्बूआ़ **16** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला "**म-दनी वसिय्यत नामा**" सफ़ह़ा **10** पर इ़ज़्ज़तो आबरू और जान के मु-तअ़ल्लिक़ है मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (ग़ीबतें करे) ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं, मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले। बिलफ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे **हुक़ूक़** मुआ़फ़ हैं। वु-रसा से भी दर-ख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें (और मुक़द्दमा वग़ैरा दाइर न करें)। अगर **सरकारे मदीना** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में ख़ुसूसी करम हो गया तो اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो।

अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वज्ह से किसी क़िस्म के हंगामे और **हड़तालें** न की जाएं। अगर **हड़ताल** इस का नाम है कि लोगों का कारोबार ज़बर दस्ती बन्द करवाया जाए नीज़ दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वगै़रा हो तो बन्दों की ऐसी **हक़ त-लफ़ियों** को कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम जाइज़ नहीं कह सकता। इस त़रह़ की **हड़ताल** ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। इस त़रह़ के जज़्बाती इक़्दामात से दीनो दुन्या के नुक़्सानात के सिवा कुछ हाथ नहीं आता।

ज़रूरी वज़ाह़त : क़त्ले मुस्लिम में शरअ़न तीन हुक़ूक़ हैं**:** (1) **ह़क़्क़ुल्लाह** (2) ह़क़्क़े मक़्तूल (3) ह़क़्क़े वु-रसा। मक़्तूल ने अगर ज़िन्दगी में पेशगी मुआ़फ़ कर दिया हो तो सिर्फ़ उसी का ह़क़ मुआ़फ़ होगा, **ह़क़्क़ुल्लाह** से ख़लासी के लिये सच्ची तौबा करे, **ह़क़्क़े वु-रसा** का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ वारिसों से है वोह चाहें तो मुआ़फ़ करें, चाहें तो क़िसास लें। अगर दुन्या में मुआ़फ़ी या क़िसास की तरकीब न बनी तो **क़ियामत** के रोज़ वु-रसा अपने ह़क़ का मुत़ा-लबा कर सकते हैं।

सदक़ा प्यारे की ह़या का कि न ले मुझ से ह़िसाब

बख़्श बे पूछे लजाए को लजाना क्या है

तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से दस्त बस्ता आ़जिज़ाना अ़र्ज़ करता हूं कि अगर मैं ने आप में से किसी की **ग़ीबत** की हो, **तोहमत** धरी हो, डांट पिलाई हो, किसी त़रह़ से **दिल आज़ारी** की हो तो मुझे मुआ़फ़ मुआ़फ़ और मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये। दुन्या का बड़े से बड़ा ह़क़्क़ुल इबाद जो तसव्वुर किया जा सकता है फ़र्ज़ कीजिये कि वोह

मैं ने आप का तलफ़ कर दिया है वोह भी और छोटे से छोटा ह़क़ जो ज़ाएअ़ किया हो उसे भी मुआ़फ़ कर दीजिये और सवाबे अ़ज़ीम के ह़क़दार बनिये। हाथ बांध कर **म-दनी इल्तिजा** है कि कम अज़ कम एक बार दिल की गहराई के साथ कह दीजिये : "मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी को मुआ़फ़ किया।[1]

जिस का मुझ पर क़र्ज़ आता हो या मैं ने कोई चीज़ आ़रियतन ली हो और वापस न लौटाई हो तो वोह दा'वते इस्लामी की मर्कज़ी मजलिसे शूरा के निगरान या ग़ुलाम ज़ादों से रुजूअ़ करे, अगर वुसूल करना नहीं चाहता तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये मुआ़फ़ी की भीक से नवाज़ कर सवाबे आख़िरत का ह़क़दार बने। जो लोग मेरे मक़रूज़ हैं, उन को मैं ने अपने तमाम ज़ाती क़र्ज़े मुआ़फ़ किये। या इलाही عَزَّوَجَلَّ

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे ह़िसाब जुर्म
देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

हुक़ूक़ुल इबाद के मुआ़-मले में ख़ौफ़ज़दा लोग तवज्जोह फ़रमाएं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़त व मल्फ़ूज़ात को पढ़ कर जिन इस्लामी भाइयों का हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी का ज़ेहन बना उन के लिये **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के पुर ह़िक्मत **म-दनी इर्शादात** पेशे ख़िदमत हैं :

---

1. **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह अन्दाज़ हर मुसल्मान के लिये बाइ़से तक़्लीद है। ख़ौफ़े ख़ुदा रखने वाला हर शख़्स इस रहनुमा तह़रीर के ज़रीए अपने मु-तअ़ल्लिक़ीन, दोस्त अह़बाब, अ़ज़ीज़ व रिश्तेदारों की फ़ेहरिस्त बना कर एक एक से मुआ़फ़ी मांगने की कोशिश कर सकता है।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : जो इस्लामी भाई हुक़ूकुल इबाद के मुआ़-मले में ख़ौफ़ज़दा हैं और अब सोच में पड़ गए हैं कि हम ने तो न जाने कितनों की ह़क़ त-लफ़ी की है और कितनों का दिल दुखाया है, **अब हम किस किस को कहां कहां तलाश करें ?**

तो अ़र्ज़ येह है कि जिन जिन की दिल आज़ारी वग़ैरा की है अगर उन से राबिता मुम्किन है तो उन को **राज़ी** कर लें और अगर वोह फ़ौत हो गए हैं या ग़ाइब हैं या येह याद ही नहीं कि वोह कौन कौन लोग हैं तो हर नमाज़ के बा'द उन के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करें चाहें तो हर नमाज़ के बा'द इस त़रह़ कह लिया करें :

"या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **मेरी और आज तक मैं ने जिन जिन मुसल्मानों की ह़क़ त-लफ़ी की है उन सब की मग़्फ़िरत फ़रमा ।"**

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत बहुत बड़ी है मायूस न हों, निय्यत साफ़ मन्ज़िल आसान । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की नदामत रंग लाएगी और मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े हुक़ूकुल इबाद की मुआ़फ़ी के अस्बाब भी करमे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से हो जाएंगे ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه "ग़ीबत की तबाह कारियां" सफ़ह़ा **296** पर इर्शाद फ़रमाते हैं :

जिन जिन ख़ुश नसीबों का येह ज़ेह्न बन रहा हो कि हमें **ग़ीबत** के मूज़ी मरज़ से छुटकारा पाने के लिये कोशिशें तेज़ तर कर देनी हैं वोह आपस में तै़ कर लें कि हम में से अगर مَعَاذَ اللّٰه कोई **ग़ीबत** शुरूअ़ कर दे तो जो मौजूद हो वोह अपनी क़ुव्वत के मुत़ाबिक़ ज़बान से टोक कर रोक दे और तौबा करने का कहे नीज़ अव्वल आख़िर ! صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب कह कर दुरूद शरीफ़ पढ़ाने के साथ कहे :

تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ! (या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ तौबा करो) येह सुन कर **ग़ीबत** करने वाला कहे : اَسْتَغْفِرُ اللّٰه (या'नी मैं **अल्लाह** तआ़ला से बख़्शिश चाहता हूं)

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस तरह हाथों हाथ तौबा की सआ़दत मिल जाएगी। जिन्हों ने **ग़ीबत** करते न सुना हो उन से एह़तियात़ लाज़िमी है, आवाज़ व अन्दाज़ ऐसे न हों कि जिन को पता न था उन को भी मा'लूम हो जाए कि फ़ुलां ने مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **ग़ीबत** की। (ग़ीबत की तबाह कारियां, स. 296)

इस के इलावा **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मुन्दरिजए ज़ैल पेश कर्दा नुस्ख़ा भी ग़ीबत से बचने के मुआ़-मले में बेह़द मुफ़ीद है कि "दो अफ़राद, तीसरे का और तीन हों तो चौथे का ह़त्तल इम्कान **तज़्किरा ही न करें**। अगर करना ही हो तो **फ़क़त़ अच्छाई बयान** करें।" मज़ीद "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" किताब सफ़ह़ा 248 से "ग़ीबत पर उभारने वाली 16 चीज़ों का बयान" और सफ़ह़ा 257 ता 282 से "ग़ीबत के 10 तफ़्सीली इलाज" पढ़ना भी इन्तिहाई ज़रूरी है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो**

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

إِنْ شَاءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

अमीरे अहले सुन्नत और फ़न्ने शाइरी

अ़न्क़रीब पेश किया जाएगा